झारखंड में सन 1857 की क्रांति - महत्त्वपूर्ण

कारण — 1765 में मुगल बादशाह शाहआलम II द्वारा से दीवानी प्राप्त होने के बाद EIC ने झारखंड के छोटानागपुर और संथाल परगना को अपने दीवानी अधिकार में माना और लगान वसूलना शुरू किया।

इसे लेकर यहां के शासक, क्रमशः जमींदार और प्रजा में विक्षोभ था। पलामू के शासक गोपाल राय को एक अंग्रेज वफादार अरबौरी उदवंत राय की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया। उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुना दी गई।

कंपनी ने चेरो राज्य को लगान न चुकाने के कारण नीलाम कर दिया। अंतिम चेरो राजा चूड़ामन राय को अपदस्थ कर दिया गया।

नागवंशी महाराजा के कार्यपालिका, न्यायपालिका और पुलिस संबंधी अधिकार छीन लिए गए थे। महाराजा के जागीरदार और उसकी प्रजा के लिए यह अपमानजनक था।

सिंहभूम, रामगढ़ और मानभूम के जमींदार भी कंपनी के प्रशासन से नाराज थे। इन्हें भी कंपनी के अधिकारियों ने जबरन

लगान वसूला था और उनके खिलाफ सैन्य कारवाई की थी। राज्य की मनमाने तरीके से बंदोबस्ती की गई, जमींदारों के विशेषाधिकार छीन लिए गए।

विद्रोहियों ने जिस आजाद सरकार की राँची में स्थापना की थी, उसके प्रधान ठाकुर विश्वनाथ शाहदेव बड़कागढ़ (राँची जिला) के जमींदार थे। बड़कागढ़ राज्य की स्थापना नागवंशी महाराजा रघुनाथ शाह ने की थी। विश्वनाथ शाहदेव नागवंशी राजपरिवार से संबद्ध थे। उनका राज्य खोरपोश राज्य था इसके अधीन 97 गांव थे। उनके क्षेत्र पर अनधिकृत रूप से ईसाई मिशनरियाँ कब्जा जमाकर धर्मांतरित आदिवासियों को बसा रही थी।

आजाद सरकार के सेनापति पाँडेय गणपत राय भी भौंरो (लोहरदगा जिला) के जमींदार थे। वे भी कंपनी की भूमि एवं राजस्व नीतियों से क्षुब्ध थे। इसी प्रकार पलामू के प्रमुख जमींदार नीलाम्बर-पीताम्बर को भी उनकी जमींदारी से बेदखल कर दिया गया था। कुडपाल के अर्जुन सिंह को भी रामगढ़ का राजा धमकाते रहता था।

इस विद्रोह के लिए कंपनी शासन की भूमि एवं राजस्व संबंधी नीतियाँ जवाबदेह थीं। जिससे सर्वाधिक प्रभावित कृषक वर्ग था।

रामगढ़ और डोरंडा के अधिकांश सैनिक-झारखंड के ग्रामीण अंचलों के निवासी थे कंपनी की नीतियों के कारण जो शोषित हो रहा था, उससे उनके परिवार का सीधा संबंध था। चरबी वाले कारतूस एवं 10 may की मेरठ की घटना से भी वे अनजान नहीं थे।

आर्थिक समस्या - कम वेतन मिलना, अंग्रेज सैनिकों के मुकाबले उन्हें हीन समझा जाना, समय पर प्रोन्नति नहीं मिलना।

यह केवल सैनिक विद्रोह नहीं था बल्कि इसमें आम जनता की भी सहभागिता थी जैसे किसान, व्यापारी, ग्राम प्रधान, ठिकैत मांझी, भोक्ता, खरवार, संथाल, कोल, मजदूर आदि

राँची और हजारीबाग में यह विद्रोह उतना जनविद्रोह नहीं बन पाया जितना यह पलामू और सिंहभूम में था। इसका कारण यह था कि राँची और हजारीबाग के विद्रोहियों को कोई शासन तंत्र स्थानीय स्तर पर खड़ा नहीं करना था, बल्कि उन्हें यथाशीघ्र कुंअर सिंह के विद्रोह का अंग बनना था।

दूसरी ओर पलामू में विद्रोह में स्थानीय जनता ने खुलकर भाग लिया। वहाँ विद्रोह का दमन हो चुका था और अंग्रेज सत्ता कायम हो चुका था। विद्रोही उनके कब्जे में थे, फिर भी विद्रोहियों के खिलाफ कोई भी आम व्यक्ति गवाही देने नहीं आया।

2. विद्रोह के लिए ब्रिटिश शासन की भूमि एवं राजस्व संबंधी नीतियाँ उत्तरदायी थीं, जो किसानों अत्यधिक असंतोष उत्पन्न करता था।

संथाल परगना में विद्रोह

(क) रोहिणी : 12 जून 1857 :

झारखंड में 1857 ई० के महाविद्रोह की चिंगारी देवघर से चार मील दूर रोहिणी की छावनी अवस्थित देशी घुड़सवार सेना ने फूँकी थी। यह 12 जून 1857 की रात की घटना है।

मेजर मैकडोनाल्ड के बंगले पर तीन फौजी अधिकारी क्रमशः मेजर मैकडोनाल्ड, लेफ्टिनेंट नार्मन लेस्ली और डॉक्टर ग्रांट चाय पी रहे थे। तभी अंधेरे का फायदा उठाकर तीन सिपाहियों ने उनपर हमला किया।

लेस्ली की मौत हो गई और दोनों अधिकारी घायल हुए।

घटना की जाँच में मेजर इमाम खाँ का नाम सामने आता है जिन्होंने तीन सिपाहियों को उकसाया था — सलामत

अली, अमानत अली और शेख हारून।
इन्हें फाँसी दे दी गई।

परिणाम —
(1) 5वीं अनियमित घुड़सवार की सेना का मुख्यालय वहाँ से हटाकर भागलपुर ले जाया गया।
लेकिन इस सेना ने 8 अगस्त 1857 को पुनः भागलपुर में विद्रोह कर दिया।
18 अगस्त को विद्रोही रोहिणी से देवघर की ओर बढ़े। देवघर पहुँचकर उन्होंने मिलहे अंग्रेज की कोठी पर हमला कर दिया। इसके बाद वे गया की ओर कूच कर गए।

हजारीबाग - राँची में विद्रोह
(रामगढ़ बटालियन का विद्रोह)

हजारीबाग और राँची में महाविद्रोह रामगढ़ बटालियन के द्वारा हुआ।
इस बटालियन की स्थापना छोटानागपुर में शांति स्थापित करने के लिए 1780 ई० में की गई थी। इसका प्रधान मुख्य नियंत्रक ऑफिस चौपमैन था जो उस समय रामगढ़ जिले का कमांडर भी था।

1857 ई० के विद्रोह के समय बटालियन का मुख्यालय रांची के डोरंडा में था।

हजारीबाग का विद्रोह : 30 July 1857

यहाँ की 8 वीं देसी पैदल सेना (आठवीं नेटिव इंफ्रेंट्री) की दो कंपनियों ने 30 जुलाई 1857 को करीब दो बजे विद्रोह का बिगुल फूंक दी इस समय हजारीबाग के उपायुक्त कैप्टन सिंपसन थे। कप्तान सिंपसन के पास पलायन के अलावे कोई विकल्प नहीं था।

विद्रोहियों ने कई स्थानों में धावा बोला। जेल के फाटक खोल दिए सभी बंदियों को रिहा कर दिया। हजारीबाग में संथाल दल के नेता रुक्मिया मांझी, बैरु मांझी और अर्जुन मांझी आजाद हो गए जमींदारों के खिलाफ 'अनाज दखल आंदोलन' चलाया।

सोनपुर रामगढ़ राजा के कोतिपुत्र सुरेन्द्र शाही और उदवंत शाही को रिहा किया गया दोनों सोनपुर जाकर विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया।

हजारीबाग विद्रोह की सूचना हजारीबाग के आयुक्त ई० टी० डाल्टन को कैप्टन ओक्स द्वारा मिली। इसके बाद विद्रोहियों पर नियंत्रण के लिए डाल्टन ने 4 अगस्त 1857 को ले० ग्राहम के नेतृत्व में डोरंडा से रामगढ़ लाइट इंफेंट्री की एक सेना टुकड़ी हजारीबाग के लिए रवाना किया।

विद्रोही दो दल में बंट गए - एक दल का नेतृत्व संबलपुर राजपरिवार का क्रांतिकारी सुरेंद्र शाही कर रहा था, वह लोहरदगा होते हुए संबलपुर की ओर रवाना हो गया।

दूसरा दल पलामू की ओर चल दिया। वहाँ से वह रोहतासगढ़ की ओर रवाना हुआ ताकि कुंअर सिंह के साथ जुड़ जाए सके। इस टुकड़ी के कई सैनिक शाहाबाद छपरा और बिहार के अन्य जिलों के थे।